International Journal of Sanskrit Research 2014; 1(1): 22-25

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN Number: 2394-7519
IJSR 2014; 1(1): 22-25
© 2014 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 15-11-2014
Accepted: 18-12-2014

जितेन्द्र कुमार दुबे
व्याख्याता ज्योतिष विभाग
श्रीमती लाडदेवी शर्मापंचोली संस्कृत महाविद्यालय बरून्दनी भीलवाड़ा राजस्थान

Correspondence:
जितेन्द्र कुमार दुबे
व्याख्याता ज्योतिष विभाग
श्रीमती लाडदेवी शर्मापंचोली संस्कृत महाविद्यालय बरून्दनी भीलवाड़ा राजस्थान

कुण्डली के अनुसार गृह प्राप्ति योग, वास्तु दोष तथा इसका निदान

जितेन्द्र कुमार दुबे

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन यापन में मूलभूत तीन चीजों की आवश्यकता रहती है ।भोजन बस्त्र एवं निवास। इनमें से निवास हेतु गृहनिर्माण सर्वाधिक अर्थसाध्य है। प्रायः देखा जाता है कि आर्थिक रुप से सम्पन्न होने पर भी व्यक्ति अपने जीवन काल में गृह निर्माण की कल्पना को साकार नहीं कर पाता अगर यदि साकार कर भी लेता है,तो तमाम तरह की परेशानियोँ जीवन में आने लगती है। ये सभी विषय ग्रहों के कारण ही होता है। वस्तुतः ग्रहो अनुसार ही भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। कि तृतीय भाव में शुभग्रह हो और चतुर्थेश बलवान होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों तो उत्तम भवन का निर्माण करता है। साथ ही इस प्रकार के योग इस लेख में प्रर्याप्त मात्रा में दर्शाया गया है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कुण्डली के अनुसार गृह प्राप्तियो कुण्डली के अनुसार ग्रह प्राप्तियोग वास्तु दोष तथा इसका निदान यहॉ पर मूर्तरूपसे प्रस्तुत है। जिससे की मानव समाज को लाभ मिल सकें।

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन यापन में मूलभूत तीन चीजों की आवश्यकता रहती है– भोजन,वस्त्र एवं निवास। इनमें से निवास हेतू गृह निर्माण सर्वाधिक अर्थ साध्य है। प्रायः देखा जाता है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर भी व्यक्ति अपने जीवन काल में गृह निर्माण की कल्पना को साकार नहीं कर पाता। इसके विपरीत कोई व्यक्ति आर्थिक रूप से बहुत सम्पन्न न होने पर भी गृह निर्माण की कल्पना को मूर्तिमान कर लेता है। इसका कारण उस व्यक्ति के जन्म कुण्डली में आगत कुछ गुण दोष है, जो शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है। 'जातकालंकार' ग्रन्थ का निम्न श्लोक इस तथ्य का द्योतन करता है–

'' स्वक्षेत्रे तुर्यनाथस्तनु पतिसहितः स्यादेकस्मा गृहाप्तिः।
सौहार्दं वा सुहृद्भिस्तदितर गृहगश्चेद् गृहालभ्ययोगः।
यावन्तः पापखेटा धनदशमगृहप्रान्त्यपैश्चेत् त्रिकस्था।
युक्तास्तावत् प्रमाणा ज्वलनवशगताः क्लेशदाः स्युर्गृहानुः।।''

जातकालंकार श्लोक सं. 9

जिसका स्पष्टीकरण क्रमवार प्रस्तुत है –

1. तृतीय भाव में शुभग्रह हों, और चतुर्थेश बलवान होकर
केन्द्र–त्रिकोण में स्थित हो तो उतम गृह की उपलब्धि होती है।
2. तृतीय भाव शुभ ग्रह युक्त हों, चतुर्थेश बली हो और लग्नेश भी पूर्ण बलवान हो तो उन्त गृह उपलब्ध होता है।
3. द्वितीय, द्वादश और चतुर्थ गृह के स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर अष्ठम स्थान में स्थित हों तो सर्वदा किराये के मकान में रहना पड़ता है।
4. द्वादशेश, द्वितीयेश और चतुर्थेश षष्ठ, तृतीय द्वादश और अष्टम स्थान में जितने पापग्रह स्थित हों उतने ही गृह नष्ट होते हैं। लग्न–त्रिकोण और केन्द्र में जितने बलवान् ग्रह हो तो उतने अच्छे गृह उपलब्ध होते है।
5. शत्रु स्थान में पापग्रह हो अथवा पापग्रह सुख भाव को देखता हो तो जातक गृह के सुख से वंचित रहता है। नीच राशि या शत्रु राशि में मंगल अथवा सूर्य स्थित हो तो मनुष्य को गृहसुख प्राप्त नहीं होता है।
6. चतुर्थेश द्वादश भाव में हो तो जातक पर – गृह में निवास करता है। अष्टम में हो तो मनुष्य को गृह का अभाव होता है।

उक्त तथ्यों के अतिरिक्त कुछ योग ऐसे भी होते हैं जो जातक को आकस्मिक गृह लाभ प्रदान करते

हैं। यथा – लग्नेश से युक्त होकर सुखेश
(चतुर्थेश) अपने गृह में हो तो मनुष्य को अकस्मात् गृह का लाभ होता है एवं मित्रों के साथ अच्छी मैत्री होती है। यदि लग्नेश से युक्त होकर सुखेश इतर गृहों में हो तो केवल गृह प्राप्ति का योग होता है।
जातक की कुण्डली में जितने पापग्रह 2,10,4,12 इन स्थानों के स्वामी से युक्त होकर त्रिक (6/8/12) भावों में हो तो उतने घर जलने से कष्ट होता है। चतुर्थ भाव से मित्र और माता के साथ गृह का विचार किया जाता है। लग्नेश से युक्त होकर चतुर्थेश अपने घर में हो तो गृह प्राप्ति योग बनता है। पापग्रहों से दृष्ट होने पर फलादेश विपरीत होगा। चतुर्थ भाव का लाभ स्थान सप्तम स्थान और भाग्य स्थान होने से 2, 10, 4, 12 उन भावों के स्वामी पाप ग्रहों के साथ 6, 8, 12 भाव में होने से जातक का घर अग्नि से नष्ट हो जाता है। मित्र भाव मूल–त्रिकोण और उच्च में ग्रहों का फल शुभ होता है।
कोई जातक अपने विस्तृत भूखंड में से किस दिशा में भवन निर्माण करे, इसके लिए उसकी कुण्डली का अध्ययन अपेक्षित है, क्योंकि ग्रहों के अनुरूप दिशा निर्धारण शुभ फलदायक होता है। यथा चतुर्थ स्थान में उपस्थित ग्रह एवं चतुर्थेश गृह निर्माण का कारक है। इस प्रकार यदि चतुर्थेश सूर्य लग्न में स्थित हो तो जातक को पूर्व दिशा में भवन निर्माण करना चाहिए।

इसके निमित्त निम्न सारणी ध्यातव्य है –

ग्रह	दिगीश
1. सूर्य	1. पूर्व
2. चन्द्रमा	2. (पश्चिम, उत्तर) वायब्य कोण
3. मगल	3. दक्षिण
4. बुध	4. उत्तर
5. बृहस्पति	5.(पूर्व, उत्तर) ईशान कोण
6. शुक्र	6.(दक्षिण, पूर्व) अग्नि कोण
7. शनि	7. पश्चिम
8. राहु	8.(पश्चिम, दक्षिण) नैऋत्य कोण
9. केतु	9.(पश्चिम, दक्षिण) नैऋत्य कोण

1. ज्यातिष रत्नाकार पृष्ट 29 धारा 20 लेखक – श्री देवकी नन्दन सिंह

ठीक[1] इसी प्रकार राशियों के अनुरूप भी गृह निर्माण की दिशा निर्धारित की जा सकती है; जैसे – मेष,सिंह,और धनु राशि पूर्व दिशा के स्वामी हैं। अतः इन राशियों के जातक को पूर्व दिशा में गृह निर्माण करना चाहिए। वृष, कन्या और मकर राशि दक्षिण के मिथुन, तुला और कुम्भ राशि पश्चिम के तथा कर्क, वृश्चिक और मीन राशि उत्तर दिशा के स्वामी हैं। अतः इन राशियों के जातक को उसी दिशा में गृह निर्माण करना चाहिए।
उपर कुण्डली के अनुरूप गृह निर्माण के विषय में बताया गया है। अब कुण्डली के अभाव में सामान्यतया वास्तु नियमों के आधार पर गृह निर्माण के संदर्भ बताना अपेक्षित है। 'वस' निवासे धातु से वास्तु शब्द की उत्पत्ति हुई है। वास्तु का मूल तात्पर्य निवास हेतु उत्तम स्थान। व्यापक दृष्टि से भवन के चतुर्दिक परिवेश एवं प्राकृतिक पर्यावरण का ध्यान रखकर वास्तु शास्त्र के नियमों का निर्धारण किया गया है। वास्तु शास्त्र के अनुसार[2] घर में किन–किन दिशाओं में किस–किस कार्य के लिए कमरा होना शास्त्र विहित है। चक्र द्वारा बताया जा रहा है।

अन्न	रतिगृह	खजाना	औषधि	देवता
रोदन	पश्चिम दिशा	उत्तर दिशा	पूर्व दिशा	मिश्रित वस्तु
भोजन				स्नान
विद्याभ्यास		दक्षिण दिशा		मंथन
शस्त्र	शौचालय	शयन	धृत	रसोई

1. बृहदवहडाचक्रम् राशि प्रकरण श्लोक सं. 4
2. ज्योतिष रत्नाकर पृष्ट 910
धारा – 356
लेखक– श्री देवकी नन्दन सिंह

भवन में (दालान) या बारामदा विचार

मकान में बारामदा या दालान महत्वपूर्ण होता है, यदि किसी की कुण्डली में सूर्य लग्न में बैठें हो तथा चतुर्थेश से सम्बन्ध बनाते हो तो उसको पूर्व दिशा में बरामदा बनवाना शुभ होता हैं।
यदि मंगल दशम भाव में हो या दशमेश हो अथवा दशमेश से सम्बन्ध बनाते हो तो ऐसी कुण्डली वाले व्यक्तियों को दक्षिण दिशा में दालान बनाना शुभकारी होगा।
यदि शनि सप्तम भाव में बैठें हो या सप्तमेश होकर के चतुर्थेश से सम्बन्ध बनाते हो तो इस स्थिति में पश्चिम दिशा में दालान श्रेयस्कर होगा।
यदि चतुर्थ भाव में बुध हो, एवं शुभ ग्रह के साथ दृष्टिपात करे तो इस स्थिति में बरामदा उत्तर दिशा में बनाना शुभकारी होगा।
कभी–कभी वास्तु नियम के अनुरूप घर न बन पाने, मुख्य सड़क, गली आदि के विपरित दिशा में होने के कारण वास्तु दोष आ जाते है। ऐसी परिस्थिति में जातक के जन्म कुण्डली के आधार पर वास्तु दोष का निवारण करना चाहिए। वैसे तो कहा भी गया है कि दिशा व्यक्ति की दशा को बदल देती है। यह बात कुण्डली के अनुसार वास्तु अनुरूप वने भवन पर पूर्णतया लागू होता है।

" स्यादुन्नतिः पूर्वनते नराणां वास्तौ धनं दक्षिण भाग तुङ्गे !
क्षयोधनानां विनते प्रतीच्यामुच्चै र्विनाशो ध्रुवमुत्तरे तु !!
प्रागुत्तरोन्नते धनसुतक्षयः सुतवधश्च दूर्गन्ध !
पूर्वस्यां श्री गृहं प्रोक्तंमाग्नेयां स्यान्महानसम !![1]

जिस किसी व्यक्ति की जन्म कुण्डली में सूर्य प्रथम भाव में बैठें हो तथा चतुर्थेश से सम्बन्ध बनाते हो एवं शुभ ग्रहों की इन पर दृष्टि हो तो ऐसे व्यक्तियों को पूर्वाभिमुख भवन बनवाना उत्तम होता है। एवं लग्नेश होकर सूर्य जब मिथुन, कन्या, तुला, और मीन राशि में चतुर्थ भाव में स्थित हो तो इस योग में 28 से 50 वर्ष की आयु में भवन प्राप्ति योग होता है।[2] एवं गृह प्राप्ति की दिशा पूर्व माना गया है। इस दिशा के स्वामी इन्द्र है। और यह सूर्य का निवास स्थान माना जाता है। चूँकि यह स्थान मुख्यतः प्रमुख व्यक्ति या पितृ स्थान भी है। अतः भवन निर्माण करते समय पूर्व में उचित खाली जगह छोड़नी चाहिए, इस दिशा में कोई रूकावट नहीं होनी चाहिए। यह दिशा वंश वृद्धि में भी सहायक होती है। अगर सूर्य किसी जातक के कुण्डली में दूषित होकर प्रथम भाव में बैठे हो तो ऐसे जातकों मान–सम्मान–प्रतिष्ठा की हानि होती है। और पितृदोष भी होता है।

1. वृहद्वास्तुमाला श्लोक सं. 149, 150
2. चमत्कार चिन्तामणि पृष्ट 35 विचार एवं अनुभव

पूर्व दिशा के दोष एवं समाधान :– यदि पूर्व दिशा के स्थान ऊँचा हो तो मकान मालिक दरिद्र होता है। सन्तान अस्वस्थ तथा मन्द बुद्धि के होते है। यदि पूर्व दिशा में निर्मित मुख्यद्वार या अन्य द्वार

आग्नेय मुखी हो तो दरिद्रता आदालती चक्कर–चोरी एवं अग्निभय बना रहता है। यदि पूर्व दिशा में सड़क से सटाकर घर का निर्माण किया गया हो एवं उस घर में पश्चिम में खुली जगह नीची हो तो उस गृह में पुरूष लम्बी बीमारी से पीड़ित होगा । यदि इसी दिशा में मुख्य निर्माण की अपेक्षा चबुतरे ऊँचे हो तो अशान्ति रहती है। आर्थिक व्यय अधिक मात्रा में होता है। और गृह स्वामी कर्जदार हो जाता है यदि पूर्व दिशा में कूड़ा–करकट पत्थर एवं मिट्टी के टीले हों तो धन एवं सन्तान की हानि होती हैं। ऐसे गृह स्वामी की कुण्डली में लग्न तथा सूर्य अवश्य ही प्रभावित रहा होगा ।इस दिशा के दोष निवारणार्थ सूर्य यंन्त्र की स्थापना करनी चाहिए। पूर्व दरवाजे पर वास्तु मंगलकारी तोरण लगाना चाहिए। एवं सूर्य की उपासना करनी वाहिए।

पश्चिम दिशा :– जिस व्यक्ति की कुण्ड़ली में शनि सप्तम भाव में स्थित हो तथा चतुर्थ भाव में मकर , कुम्भ, या तुला राशि हो तथा शुभ ग्रहों से सम्बन्ध अच्छे हो तो ऐसे योग वाले जातक को पश्चिमाभिमुख गृह बनवाना उत्तम होता है। एवं जमीन घर द्वार–खेती–वारी में लाभ प्राप्त हेता है।[1] यही शनि, निर्बल तथा पीड़ित हो तो माता या पिता का मृत्युयोग जल्दी होता है,एवं गृह सौख्य नहीं मिलता है। इस दिशा के स्वामी वरूण देव है। और यह दिशा वायु तत्व को प्रभावित करती हैं। वायु चंचल होता है, अतः यह दिशा चंचलता प्रदान करती हैं। यदि भवन का दरवाजा पश्चिमाभिमुख हो तो वहाँ रहने वाले मनुष्यों का मन चंचल होगा। पश्चिम दिशा सफलता–यश–भव्यता और कीर्ति प्रदान करती है।

दोष विचार :– जिस व्यक्ति की कुण्ड़ली में पश्चिम दिशा भावस्थ शनि नीच के हो तथा चतुर्थेश के साथ शुभ सम्बन्ध न हो तो अपयश और हानि प्रदान करते हैं। यहाँ पर वास्तु शास्त्र के अनुसार यदि गृह स्थल गृह के अहाते– कमरे तथा बरामदे का पश्चिमी भाग नीचा हो तो अपयश और हानि होगी। पश्चिम की अपेक्षा पूर्व में खाली स्थान कम होने पर पुत्र सन्तान की हानि होगी ।

चमत्कार चिन्तामणि पृष्ट सं. 419

पाश्चात्यमत पश्चिम में रसोई घर हो तो गृह स्वामी काफी धन कमायेगा, लेकिन उस धन की वृद्धि नहीं होगी। यदि ठीक पश्चिम में अग्नि स्थल हो तो घर में निवास करने वालों को शनि मंगल के प्रभाव के कारण गर्मी–पितादि की शिकायत होगी, क्योंकि शनि पश्चिम दिशा का स्वामी है। घर का दरवाजा छोटा होने से केतु के कुप्रभाव से गृह स्वामी के उज्ज्वल भविष्य में बाधा आयेगी। अगर पश्चिम भाग में स्थित द्वार नैऋत्यदिशा मुखी हो तो लम्बी बीमारी–असामयिक मृत्यु और आर्थिक हानि की सम्भावना बनी रहती है। पश्चिम का द्वार वायव्य मृखी हो तो आदालती चक्कर में वृद्धि होती है। तथा धन की हानि भी होती है। यदि पश्चिम की ओर के चबुत्तरे मुख्य वास्तु के इतर निम्न हो तो धन हानि और अस्वस्थता होगी। अगर पश्चिम भाग पानी या बरसात की पानी पश्चिम से होकर बाहर निकले तो पुरूष लम्बी बीमारियों का शिकार होता है।

निवारण :– पश्चिम दिशा जनित दोष निवारणार्थ घर में वरूण यन्त्र की स्थापना करनी चाहिए। शनिवार का व्रत करना चाहिए एवं शनिवार को शमी वृक्ष में जलदान करना चाहिए।

'' प्रसादे सदनेऽलिन्दे द्वारे कुण्डे विशेषतः !
दिङ् मूढ़े कुलनाश स्यात् तस्मात् संसाधयेद्दिशः !!

प्रथमं सुसमे ज्ञेत्रे प्राचीं संसाधयेत् स्फुटम् !
सिद्वान्तोक्त प्रकारेण ततो निष्पादयेद् गृहम् !!''[1]

उत्तर दिशा :– यदि किसी व्यक्ति की कुण्डली में चतुर्थ भाव में बुध के साथ चन्द्र स्थित हो तो इस योग में उत्तराभिमुख भवन प्राप्ति योग होता है। एवं इसी भाव में पापग्रहों से सम्बन्ध होने पर गृह सुख से वंचित कर देता है।[2] तथा दूसरे के घर में रहना पड़ता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार इस दिशा के स्वामी कुबेर है। यह दिशा जल तत्व को प्रभावित करती है। भवन बनाते समय इस दिशा को खुला रखना चाहिए इस दिशा में निर्माण करना परमावश्यक हो तो इस दिशा के निर्माण को अन्य दिशाओं के अनुपात में थोड़ा नीचा रखना चाहिए। यह दिशा सुख–सम्पति–धन धन्य एवं जीवन में सभी प्रकार के सुख को प्रदान करती है। वास्तु शास्त्र में उत्तराभिमुख मकान और दुकान को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

1. वृहद्बास्तुमाला दिक्साधन प्रकरण श्लोक सं. 1, 2
2. चमत्कार चिन्तामणि–यवनमत पृष्ठ 228

दोष विचार :– जिस किसी व्यक्ति की कुण्ड़ली में इस दिशा में बुध पीड़ित हो तो यहॉ का बना हुआ भोजन कलह का कारण होता है। उत्तरी दिशा उन्नत होने पर उस परिवार की सम्पदा नष्ट होगी तथा घर की स्त्रियाँ बीमार रहेंगी। उत्तरी भाग का द्वार बायव्य मुखी हो तो चोरी एवं अग्निभय रहेगा। उत्तरी हिस्से में खाली जगह न हो एवं अहाते की सीमा से सटकर मकान हो और दक्षिण में खाली जगह हो तो वह मकान दूसरों की सम्पत्ति बनकर रह जाती है। उत्तरी दिशा में निष्प्रयोजन सामग्री गोबर के ढेर या टीले आदि हो तो आर्थिक हानि होती है।

निवारण :– भैरव व हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए, दरवाजे पर वास्तु तोरण लगायें। उत्तर दिशा दोष दूर करने के लिए कुबेर यन्त्र के साथ बुध ग्रह के यन्त्र को भी स्थपित करना चाहिए। दक्षिणवर्ती सूंड वाले गणेश जी के मूर्ति को द्वार के अन्दर एवं बाहर लगायें। अष्टकोणीय दर्पण मुख्य द्वार के उपर करें।

दक्षिण दिशा :– जिस व्यक्ति की कुण्डली में दशमेश होकर मंगल, सुख भाव में कर्क,तुला, वृश्चिक, और मिथुन राशि में स्थित हो तो इस योग में दक्षिणाभिमुखी भवन प्राप्त होता है।[1] तथा अपने उद्योग से ही घर वार प्राप्त करता है। यदि अग्नि राशि का मंगल हो तो घर जलता भी रहता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार आम तौर पर दक्षिण दिशा को अच्छा नहीं मानते हैं। क्योंकि दक्षिण दिशा में यम का निवास माना जाताहै। और यम मृत्यु के देवता है। भवन निर्माण करते समय इस दिशा को पूर्णतया बन्द रखना चाहिए और सर्वप्रथम दक्षिण भाग को ढकना चाहिए। एंव यहाँ पर भारी निर्माण करना चाहिए । यदि यह दिशा दूषित हो या खुला हो तो शत्रु भय या रोग प्रदान करने वाली होती हैं।[2]

दोष निवारण विचार :– इस दिशा के दोष निवारणार्थ दक्षिण द्वार पर मंगल यंन्त्र लगाना चाहिए दक्षिणवर्ती सूंड़ वाले गणपति द्वार के सामने अन्दर बाहर लगाना चाहिए एवं मंगल का जप करने से वास्तु दोष दूर हो जाता है।

1. चमत्कार चिन्तामणि– पृष्ठ सं. 167
2. वास्तु द्वारा गृह निर्माण– पृष्ट सं. 40, 41 लेखक– आचार्य ओम प्रकाश '' कुमावत ''

सारांशः– प्रस्तुत लेख में एक जातक के कुण्डली के अनुसार गृहप्राप्ति योग के बारे में बताया गया है। किसी व्यक्ति को उत्तम गृह के निर्माण परिस्थित में होती है इसी प्रकार मध्य गृह प्राप्ति योग और अधम गृह प्राप्ति के विषय में बताया गया है।कभी –कभी व्यक्ति को पूर्व निर्मित गृह प्राप्ति हो जाता है। जिसमें निवास करना जातक के लिए शुभ–अशुभ होता है। इस सन्दर्भ में वास्तुदोष एवं कुण्डली दोष दोनों को समेकित रुप से अध्ययन करने पर दोष निवारण आसान हो जाता है। प्रायःघर में दोष होने के कारण व्यक्ति का परिवारिक जीवन कष्टप्रद होता है, क्योकि व्यक्ति की कुण्डली में गृह प्रतिबन्धक योग या बास्तु दोष की स्थिति होती है। अतः इन

सभी विषयों को इसलेख के माध्यम से विशेष रुप से वताने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष– कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति गृह प्राप्ति में कठिनाई का अनुभव करते हैं,गृह निमार्ण के बाद भी सुख के स्थान पर बाधाओ का सामना करते रहतें है। निर्मित गृह में वास्तुदोष दूर करना अथिक अर्थसाध्य होने के कारण निरुपाय हो गया है, उन्हें अपनी कुण्डली में आगत दोषों को दूर करने दूर्लभ गृह प्राप्ति को मूर्त कारते हुए सुलभ सुखानुभूति कर सकतें हैं।